*** खंडकाव्य के परिप्रेक्ष्य में "भस्मांकुर" का अनुशीलन ***

xxx अ नु क्र म णि का xxx

प्रथम अध्याय : 1- 35

कवि नागार्जुन – व्यक्तित्व और कृतित्व ।

नागार्जुन का जीवन परिचय –

(जन्म, पारिवारिक जीवन, विद्यार्थी जीवन, विवाह, यायावरी, पुनः गृहस्थी जीवन, आजीविका)

व्यक्तित्व –

(गरीबों के प्रति सहानुभूति, विद्रोही भावना, रुढियों का विरोध, स्वतंत्रता संग्राम में प्रेरणा तथा योगदान, बौध्द धर्म का प्रभाव, व्यक्तित्व निर्माण के आदर्श महापुरुष एवं साहित्यकार)

कृतित्व –

(युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखे, हजार–हजार बाहोंवाली, तालाब की मछलियाँ, तुमने कहा था, खिचडी विप्लव देखा हमने, पुरानी जूतियों का कोरस, ऐसे भी हम क्या । ऐसे भी तुम क्या, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, भस्मांकुर ।)

द्वितीय अध्याय : 36 - 64

खंडकाव्य स्वरुप – सैध्दांतिक विवेचन ।

काव्य रुपों का वर्गीकरण –

अ) संस्कृत में काव्य का वर्गीकरण ।

आ) अंग्रेजी में काव्य का वर्गीकरण ।

इ) हिंदी में काव्य का वर्गीकरण ।

खंडकाव्य का स्वरुप –

अ) परिभाषा ।

आ) हिंदी में खंडकाव्य चिंतन ।

इ) खंडकाव्य के तत्व ।

ई) खंडकाव्य के अंगों का विभाजन ।

उ) खंडकाव्य की विशेषताएँ ।

ऊ) खंडकाव्य के भेद :-

1. लोक से उद्‌भूत - खंडकाव्य ।
2. देशी-विदेशी काव्य परंपरा से उद्‌भूत खंडकाव्य ।

खंडकाव्य का सैध्दांतिक विवेचन :

क) खंडकाव्य और महाकाव्य की समता-विषमता ।

ख) खंडकाव्य और चरितकाव्य ।

ग) खंडकाव्य और एकार्थकाव्य ।

घ) खंडकाव्य और प्रेमाख्यान काव्य ।

तृतीय अध्याय : 65 - 110

भस्मांकुर का वस्तुविधान (कथावस्तु चरित्रांकन इ.) ।

अ) 'भस्मांकुर' खंडकाव्य का नामकरण ।

ब) कथावस्तु ।

क) चरित्रांकन ।

ड) 'भस्मांकुर' के प्रमुख पात्र -

1. **कामदेव** - (स्वामीभक्ति - कर्तव्य परायण - आदर्श मित्र - आदर्श पति - आत्मविश्वासी)
2. **रति** - (अद्वितीय सुंदरी - मदन की प्रेरणा स्त्रोत - लोकहितवादी नारी - भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व)
3. **वसंत** -

इ) 'भस्मांकुर' के गौण पात्र -

1. शिव
2. पार्वती
3. जया-विजया

चतुर्थ अध्याय : 111 - 147

"भस्मांकुर" का शिल्प-विधान (भाषा शैली, अलंकार, छंद, रस) -

कवि नागार्जुन की शिल्पगत दृष्टि :

"भस्मांकुर" का शिल्प विधान :

अ) **भाषा** –

भाषा–चुनाव तथा महत्व ।

"भस्मांकुर" की भाषा–गुण – शैली ।

आ) **अलंकार** –

1. अलंकार की परिभाषा ।
2. अलंकार के भेद ।
3. "भस्मांकुर" में अलंकार–विधान ।

इ) **छंद** –

1. छंद के भेद ।
2. "भस्मांकुर" में छंद–योजना ।

ई) **रस** –

1. रस के भेद ।
2. "भस्मांकुर" में रस–योजना ।

पंचम अध्याय : 148 - 173

"भस्मांकुर" का जीवन दर्शन (उद्देश्य) –

"भस्मांकुर" काव्य में आधुनिकता :

"भस्मांकुर" में नारी संबंधी विचार :

लोक–हित की भावना :

काम का महत्त्व :

विज्ञान संबंधी विचार :

प्राचीन रुढियों तथा पाखंडों के प्रति अनास्था :

सहयोग में अटूट विश्वास :

मालिकशाही और गंदी राजनीति के प्रति आक्रोश एवं विरोध :

आशावादी बनने का संदेश :

षष्ठ अध्याय : 174 - 183

उपसंहार –

संदर्भ – ग्रंथ–सूची –